



### NEWSMAKERS



### UPSMA ORGANISES A WORKSHOP ON 'HEALTH INSURANCE' FOR SUGAR MILLS WORKER

To better explain the benefits of workers health Insurance Policy, introduced by U.P. Sugar Mills in close co-ordination with M/s National Insurance Co. Ltd., U.P. Sugar Mills Association organized a one day seminar on 22<sup>nd</sup> April, 2024. Human Resource and other Head of Departments (HODs) of various sugar factories attended and enriched themselves with various nuances of Health Insurance. Over 2 lac sugar mills workers are benefitted by this especially designed Health Policy.



Various information regarding insurance policy was shared by the experts including Insurance Company, Serving Agency and TPA. The main purpose of the workshop was to create awareness among mill workers about the health policy and mediclaim. A successful interaction and question-answers session were also held between the participants and TPA services provider.

### GOVT. GIVES NOD TO SUGAR MILLS TO USE 6.7 LAKH TONNES OF B HEAVY MOLASSES FOR ETHANOL PRODUCTION

A senior official from the Food Ministry stated on 24th April (Wednesday) that the government has granted permission to sugar mills to utilize 6.7 lakh tonnes of B heavy molasses for ethanol production during the current year. This decision comes in light of sugar mills having excess stocks of B-heavy molasses produced before the ban on its use on December 7 last year.

Subsequently, the ban was reversed by the government a week later, allowing the use of cane juice and B-heavy molasses, within the overall cap of diverting 17 lakh tonnes of sugar for ethanol production for the 2023-24 ethanol supply year (ESY)

“We have permitted sugar mills to utilize B-heavy molasses held by them for ethanol production. This directive has been communicated to the Petroleum Ministry,” the official informed. He further explained that this allowance for using B-heavy molasses is in addition to the capped diversion of 17 lakh tonnes of sugar for ethanol production for the 2023-24 ESY.

Presently, sugar mills reportedly hold a stock of 6.7 lakh tonnes of B-heavy molasses as per information from the state cane commissioners.

Source; Chinimandi.com, 24<sup>th</sup> April, 2024

### ETHANOL PURCHASE HELPED FARMERS TO RECEIVE ABOUT RS. 80,000 CRORE IN PAST 10 YEARS: PM MODI

During a public gathering in Dhaurahra, Sitapur, Prime Minister Narendra Modi addressed the issue of sugarcane and outlined the government's efforts towards farmer welfare.

PM Modi said, “Lakhimpur Kheri, Sitapur area is called the sugar bowl of UP and today the price of sugarcane has also increased to Rs 370 per quintal, the farmers here have also



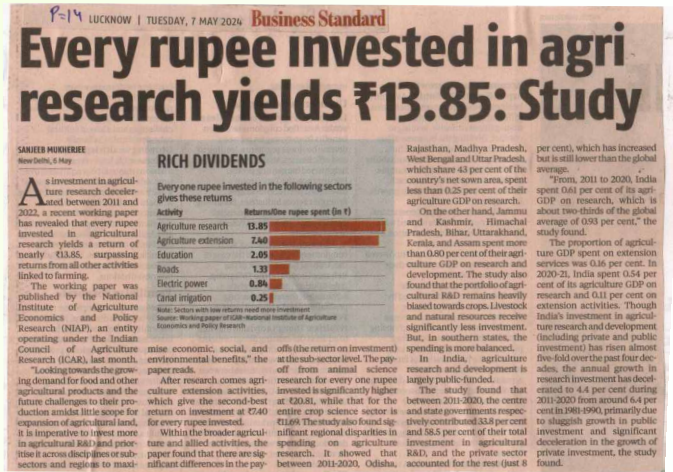
received hundreds of crores of PM KISAN SAMMAN NIDHI.

PM Modi said that 'Ethanol' is one good example of the work being done for the farmers. Now, not only sugar is produced from sugarcane but ethanol is also produced. Today our UP is number 1 in ethanol production in the country. Farmers have received about Rs 80,000 crore rupees through the purchase of ethanol in the past 10 years," he said.

Source; Chinimandi.com, 6<sup>th</sup> May, 2024

## Legal Updates

- PIL on interest on Delayed Cane Price Payment Rashtriya Kisan Mazdoor Sanghathan vs State of U.P. & others, listed before the Hon'ble Allahabad High Court, Lucknow bench is to be taken on 27<sup>th</sup> May, 2024.
- Litigation in the matter of imposition of VAT on ENA, State of U.P. vs UPSMA listed before the Hon'ble Supreme Court is likely to be heard on 16<sup>th</sup> May, 2024.



Source; Business Standard, 7<sup>th</sup> May, 2024

## मुजफ्फरनगर: मशीन से होगी गन्ने की कटाई और छिलाई, किसान के खेत में हुआ ट्रायल , दंग रह गए देखने वाले

गन्ना छीलने के झंझट से किसानों को निजात मिलने वाली है मशीन से पहले गन्ना कटाई और फिर छिलाई होगी। मंसूरपुर शुगर मिल की ओर से 22 अप्रैल को गाँव बोपाड़ा में खेतों से गन्ना काटकर छिलाई वाली मशीन का ट्रायल किया गया। गन्ना महाप्रबंधक उत्तम कुमार वर्मा ने बताया कि यह मशीन गन्ने को जड़ से काटकर

अलग करती है। उन्होंने बताया कि अभी इस मशीन का ट्रायल चल रहा है, जल्द ही यह मार्किट में आ जाएगी। इस मशीन के आ जाने से किसानों को गन्ना कटाई और छिलाई करने वाले मजदूरों की समस्या नहीं रहेगी।

खेत में गन्ना काटने के बाद दूसरी मशीन में इसके अगोले को अलग किया जाता है। इन मशीनों से आने वाले साल में लाभ हो सकता है। असल में खेतों में काम करने वाले किसानों और मजदूरों की संख्या में तेजी से कमी आ रही है। घटती जोत के कारण किसानों का खेत से पलायन हुआ है। एक दिन में यह मशीन 500 क्विंटल गन्ने कि कटाई कर सकती है।

स्रोत; अमर उजाला, 24 अप्रैल, 2024

## खाण्डसारी पर विशेष कवरेज

भाग -2

### गन्ने की कमी से जूझ रहा चीनी उद्योग

अधिकतर चीनी मिलों को वर्तमान में गन्ने की कमी का सामना करना पड़ रहा है जिसकी वजह से मिल के पेराई में बाधा आ रही है। गन्ने की कमी का एक प्रमुख कारण खांडसारी है।

चीनी एवं खांडसारी उद्योग की जानकारी रखने वाले विशेषज्ञ यह मानते हैं कि चीनी तथा खांडसारी के मध्य भेद करने हेतु तकनीकी मानक लागू करने की गंभीर आवश्यकता है:

- मानकों के न होने से बाजार में भ्रम की स्थिति रहती है तथा इस प्रकार चीनी मिलों के वाणिज्य हितों को नुकसान पहुँच सकता है।
- इस विषय पर राज्य तथा केंद्र सरकारों के मध्य वार्ता द्वारा मत स्थिर करने हेतु गन्ना नियंत्रण आदेशों में यथोचित संशोधन करते हुए खांडसारी के मानक निर्धारित किये जा सकते हैं।
- इसी प्रकार चीनी मिलों द्वारा उत्पादित शीरे तथा खाण्डसारी निर्मित शीरे के मध्य भिन्नता स्थापित की जा सकती है। इस संबंध में आवश्यक पहल भारत सरकार के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्रालय द्वारा की जानी है।

## तीन गुणा होगा गन्ने का उत्पादन, बढ़ेगी किसानों की आय

यदि आप गन्ना किसान हैं, गन्ने की फसल के उत्पादन को लेकर परेशान हैं तो आपको घबराने की जरूरत नहीं है। बाबा साहब भीमराव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय ने गन्ने पर शोध कर उसकी उपज को प्रभावित करने वाले आनुवांशिक कारकों को समझने में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है। इससे गन्ने के उत्पादन में तीन गुणा तक की बढ़ोतरी हो सकती और किसानों की आय भी बढ़ेगी। विश्वविद्यालय प्लांट बायोटेक्नोलॉजी विभाग की प्रो. संगीता सक्सेना के नेतृत्व में जीवविज्ञानी डा. यूसुफ अख्तर ने भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के साथ मिलकर शोध किया है।

प्रो. संगीता सक्सेना ने बताया कि शर्करा संचय के लिए जिम्मेदार जीन पर ध्यान

Continued on the next page...





केंद्रित करते हुए गन्ने पर जिबरेलिन एसिड -तीन (जीए-तीन) के प्रभावों की पड़ताल की गई। इसके प्रयोग से गन्ने में मिठास की माला में बढ़ोत्तरी के साथ ही उत्पादन में इजाफा हुआ है। शोधार्थी कीर्ति और गन्ना संस्थान की टीम ने शोध के बाद यह पाया कि इसके प्रयोग से किसानों की आय में वृद्धि के साथ ही चीनी उत्पादन में भी बढ़ोतरी हो सकती है। कई अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में शोध प्रकाशन के बाद अब विश्वविद्यालय की ओर से इस तकनीक को पेटेंट कराया जायेगा।

स्रोत; दैनिक जागरण, 23 अप्रैल, 2024

### गर्मी के बीच चुनावों से इस साल होगी चीनी की रिकॉर्ड खपत

भीषण गर्मी के बीच हो रहे लोकसभा चुनावों की वजह से देश में इस साल चीनी की खपत बढ़कर रिकॉर्ड स्तर पर पहुँच सकती है। अधिक खपत से न सिर्फ चीनी उत्पादक कंपनियों का मार्जिन बढ़ेगा बल्कि गन्ना किसानों को समय पर भुगतान करने में मदद मिलेगी। हालाँकि चीनी की मांग बढ़ने से घरेलू बाजार में इसकी कीमतें बढ़ सकती हैं। नेशनल फेडरेशन ऑफ कोऑपरेटिव शुगर फैक्ट्रीज लि. के प्रबंध निदेशक प्रकाश नाइकनवरे ने कहा, गर्मी के बीच हो रहे लोकसभा चुनावों की वजह से चीनी की मांग में असामान्य वृद्धि देखने को मिल रही है। इससे इस साल चीनी की कुल खपत बढ़कर रिकॉर्ड 2.9 करोड़ टन पहुँच सकती है। 30 सितंबर को समाप्त विपणन वर्ष 2022-2023 में कुल खपत 2.78 करोड़ टन रही थी।

बलरामपुर चीनी मिल्स की कार्यकारी निदेशक अवंतिका सरावगी ने कहा, देश के कई हिस्सों में अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से अधिक पहुँच गया है। इस बीच हो रही सियासी रैलियों में लाखों की भीड़ जुटने से आइसक्रीम और शीतल पेय की खपत बढ़ गई है, जिससे चीनी की मांग औसत से ज्यादा है।

स्रोत; अमर उजाला, 24 अप्रैल, 2024

### बीसीएमएल को बायोप्लास्टिक के लिए वैश्विक खिलाड़ियों का मिला साथ

बलरामपुर चीनी मिल्स लिमिटेड (बीसीएमएल) ने अपनी आगामी पीएलए-बायोप्लास्टिक निर्माण के लिए तीन प्रसिद्ध तकनीकी विशेषज्ञों सुल्जर एजी, अल्पाइन इंजीनियरिंग जीएमबीएच और जैकब्स के साथ समझौता किया है। सुल्जर एजी बायोप्लास्टिक प्लांट की स्थापना में सहायता के लिए अत्याधुनिक पॉलीलैक्टिक एसिड (पीएलए) उत्पादन तकनीक प्रदान करेगा। गन्ने को अपने प्राथमिक फीडस्टॉक के रूप में उपयोग करते हुए, प्लांट का लक्ष्य राष्ट्रीय स्थिरता उद्देश्यों के लिए बीसीएमएल की प्रतिबद्धता के अनुरूप सालाना 75,000 टन खाद योग्य पूरी तरह से पुनरचक्रण योग्य बायोप्लास्टिक का उत्पादन करना है।

इस समझौते पर बोलते हुए बीसीएमएल के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक विवेक सरावगी ने कहा कि प्लास्टिक प्रदूषण की समस्याओं को हल करने और अगली पीढ़ी को आकार देने के लिए अपने सामूहिक ज्ञान और विशेषज्ञता को एक साथ रखकर नवोन्मेषी एवं टिकाऊ समाधान के लिए नए तकनीकी भागीदारों के साथ जुड़ना हमारे लिए खुशी की बात है। पीएलए उद्यम हमारा ड्रीम प्रोजेक्ट है और हम इसे नए

सिरे से बनाने के लिए बेजोड़ तकनीकी सहायता प्रदान करना चाहते हैं। यह एसोसिएशन इन वैश्विक खिलाड़ियों और उनकी विश्व स्तरीय पेशकशों में हमारे अंतर्निहित विश्वास का परिणाम है। संयुक्त प्रयासों से हम भारतीय बायोप्लास्टिक क्षेत्र में तकनीकी रूप से मजबूत, टिकाऊ बदलाव लाने का इरादा रखते हैं।

स्रोत; शुगर टाइम्स, अप्रैल, 2024

### एथेनॉल मिश्रण है चीनी उद्योग के लिए गेम चेंजर

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) कानपुर एवं शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसटीएआई) के संयुक्त तत्वाधान में एनएसआई कानपुर में एक दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। समसामयिक एवं राष्ट्रीय महत्त्व के ज्वलंत विषय 'वर्तमान परिपेक्ष्य में एथेनॉल उत्पादन की संवहनीयता' विषय पर अखिल भारतीय संगोष्ठी का आयोजन 12 अप्रैल को किया गया।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. डी स्वाइन ने कहा कि पेट्रोल के साथ एथेनॉल मिश्रण के लिए सरकार का दृढ़ प्रयास चीनी उद्योग के लिए गेम चेंजर रहा है। 2025 तक पेट्रोल में 20 प्रतिशत एथेनॉल मिश्रण प्राप्त करने की सरकार की प्रतिबद्धता ने एथेनॉल को एक मजबूत प्रोत्साहन प्रदान किया।

एसटीएआई के अध्यक्ष संजय अवस्थी ने कहा कि 20 प्रतिशत का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एथेनॉल उत्पादन की प्रक्रिया तेज करने की जरूरत है। इसके लिए सरकार के साथ उद्योगों को प्रयास करना होगा।

स्रोत; शुगर टाइम्स, अप्रैल, 2024

### SUGARCANE YIELD ESTIMATION: NEED TO INTEGRATE CONVENTIONAL METHODS WITH NEW-AGE TECHNOLOGIES, SAYS ROSHAN LAL TAMAK

The sugar industry continues to face several issues. One key concern, further highlighted in the current sugar season, is the accurate estimation of sugarcane crop.

In an exclusive interview with ChiniMandi, Executive Director & CEO (Sugar Business), DCM Shriram Limited and President, Uttar Pradesh Sugar Mills Association (UPSMA), Roshan Lal Tamak enumerates the challenges dogging the sugar industry. He has listed the measures that could be considered to achieve accuracy in estimating sugar production in the country.

To read the full interview, may go through the UPSMA Website (<https://upsma.org/important-news/>)



## From the Archives

### Method of sugarcane planting in Mauritius as written in a book published in 1912

The cane is generally planted in holes, 2,800 to the acre, which is supposed to be better than planting in rows; especially because cane in holes is much more sheltered from storms.

The holes are placed 3 ft. apart in rows 3 or 4 ft. from each other. They plant two top ends in each hole, cover them slightly with earth, water them, and leave them to sprout. When the young shoots are well developed, manure in the form of sulphate of ammonia, saltpetre, superphosphate, and potash fertilizers or mixtures of them, is put on the plants, and when the cane, has grown to some height a quantity of rotten stable dung is added. In addition, the fields are weeded and trashed, and as soon as the cane is ripe it is cut.

Ring Pit Method seems the modification of above method

## Update from the Social Media:

- यदि चोटी बेधक कीट की पहली पीढ़ी का प्रकोप था तो चोटी बेधक कीट से ग्रसित कल्लों को ज़मीन से एक इंच नीचे से काटकर जानवरों को खिला दें या नष्ट कर दें। कीट का मोथ (तितली) निकालना शुरू हो गया होगा जोकि दूसरी पीढ़ी की शुरुआत करेगी। दूसरी पीढ़ी की संख्या पहली पीढ़ी से ज्यादा होगी तथा ज्यादा नुकसान पहुंचाएगी। इसलिए यही सही समय है कीटनाशक डालने का। कोराजन या अन्य अच्छी कम्पनी का CTPR के इस्तेमाल का सही समय है। 150 ml कोराजन/ सीटीपीआर प्रति एकड़ 350 से 400 लीटर पानी में जड़ों के पास ज़मीन में डालना चाहिं। इससे कम पानी के इस्तेमाल से कीटनाशक का प्रभाव कम हो जायेगा।



- Padmashri Bakshi Ram Yadav

- Three public sector sugar mills had been closed down during the late 90s which brought down the acreage under the crop to <30k hectares. The majority of the sugarcane area in 3 upper Assam districts had been converted to small tea gardens and agarwood plantation. One agarwood tree in these districts fetches Rs. 1-5 Lakhs in 10-12 years depending on the quantum of natural resin formation. Very recently one private sector sugar mill has come up with 1000TCD in central Assam in sugarcane belt. Also a private jaggery factory has been established in the same locality.

Quality planting materials have been supplying to those mills for contract farming in the vicinity of the mills. We are quite hopeful that the acreage will certainly increase in central Assam due to establishment of new sugar and jaggery mills.

## Sugar Shots

You may have already heard about the supposed healing powers of it. So much so, that in Ancient Greece and Rome, it was regarded mainly as a medicine. And later on in England, it was introduced not only as a spice, but for its alleged medicinal purposes as well. In the middle of the 12th Century, it was used as a treatment for anything from a fever and cough to chapped lips, pectoral ailments and stomach diseases. It may also help heal wounds when antibiotics fail.

## Did You Know!

The word "Sugar" comes from the Sanskrit word "sarkara"

The initial process of cultivation sugar was to sun-dry the sugarcane juice, the method being invented in India for the first time. This process produced sugary solids that were the color of sand. The Sanskrit word "sarkara" also means gravel or sand. It could also be considered "Brown sugar" used in modern times as a healthy alternative to processed white sugar.

## Quiz No. 5

What can't be processed from sugarcane?

- A. Rum B. Molasses C. Sweetener  
D. All of the above

Answer will be shared in next issue of UPSMA Newsletter

## Answer of Quiz No. 4

- A. Bio Plastic B. Ethanol C. Bio-Electricity  
D. Bio-Machines

Ans. D. Bio-Machines

UPSMA Newsletter titled 'Varta' the Dialogue is providing information on sugar, sugar industry and sugar byproducts. We request you to share your thoughts and experience with us through write-ups, success stories, updates, photographs etc. We publish your creative in the next edition of this newsletter. You are requested to send your entries to be published in UPSMA newsletter through mail at [upsma@upsma.org](mailto:upsma@upsma.org). The newsletter will be uploaded on UPSMA website.